❑कविता

सपनौ आयौ

हीरालाल शास्त्री

कवि परिचै

हीरालाल शास्त्री रौ जलम 24 नवंबर, 1899 में जोबनेर में होयौ। आप प्रगतिसील काव्यधारा रा कवि मानीजै। आजादी रै बगत लोगां में आपरी कविता रै सायरै अर आपरै ओजपूरण सुर सूं आजादी री अलख जगायी। गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' अर भैरूलाल 'काळाबादळ' रै साथै जनवादी सुर में सुर मिलायनै लोकगीतां री धुन माथै कविता बणायनै देस में आजादी री चेतना नैं चेतन करी। आम जन खातर आप काव्य, गीत, कविता री सिरजणा करी। हीरालाल शास्त्री प्रगतिसील धारा रा साचै अरथां में जनकवि हा। जन-जागरण सारू राजस्थानी कविता अर गीत रौ स्हारौ लेयनै आप जन-जन में देसप्रेम अर बळिदान री भावना भरी अर समाज रै विकास सारू सांगोपांग प्रयास करयौ। जद जनता गुलामी री बेड़्यां में कसमसीजै ही अर जंग रा ढोल बाजण री वेळा घणी नैड़ी ही उण वेळा लोगां में आतम-बळिदान री भावनावां भरण वाळी कवितावां आप लिखी। आप वनस्थली विद्यापीठ री स्थापना करी। 28 दिसंबर, 1974 में आपरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

'सपनौ आयौ' कविता प्रगतिसील अर मार्क्सवादी विचारधारा री पांत री सखरी रचना है, जिणमें जनवादी सुर निगै आवै। धरती माथै कवि मोटौ बदळाव चावै, जिणमें पूंजीवाद अर सोसण रौ नास होवै अर निबळां रौ समानता साथै राज होवै। कवि रौ सुपणौ सामाजिक, आरथिक अर राजनीतिक बदळाव रौ प्रतीक है। औ सुपणौ ऊपर सूं दीखण में जित्तौ सांत लखावै, बित्तौ ई मांय सूं गरीबी, भूख, सोसण, असमानता सूं उपज्योड़ौ असंतोस अर रीस है। कवि रौ ध्येय है कै भेदभाव रौ अंत होवणौ इज चाईजै। कवि रौ मन बदळाव खातर घणौ अधीर है। उणरौ अवचेतन मन भी आम आदमी री पीड़ सूं दुखी है। सुपणां में भी आ इज पीड़ निगै आवै। विचारां रै भतूळियै मन रै आंगणै सुपणा रै पाण काळी-पीळी आंधी उठै अर आ आंधी विरोध अर रीस रौ इज प्रमाण है जठै आम जन में आमूळचूळ बदळाव री भावना है। जळ अर थळ रौ अेक होवणौ असमानता रौ नास है अर मोटी क्रांति रौ प्रतीक है। भूमि रौ संपटपाट होवणौ पूंजीवाद रौ नास अर आम आदमी रै मजबूती रौ पड़बिंब है। पहाड़ां रौ टूट जमीं में मिळणौ, जळ-थळ अेक होवणौ, टीबा अर नदी रौ बदळाव, ऊंचै रौ नीचै उतरणौ, निबळां रौ मजबूत होवणौ, खजाना खाली होवणा अर गरीब रौ पेट भरणौ सगळा विचार अेक नूंवै जुग री कल्पना करै, जठै गरीब रौ पेट भर्‌योड़ौ है, उणरी झूंपड़ी म्हैल ज्यूं होवै अर जठै भेद अर सोसण नै समाज में ठौड़ नीं है। कवि रौ विस्वास है कै अेक दिन म्हारौ औ सुपणौ अवस साच होसी। कुल मिळायनै 'सुपणौ आयौ' कविता घणी असरदार, ओजपूरण, सीधी अर बदळाव रै मिजाज री है।

सपनौ आयौ

सपनौ आयौ अेक घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
काळी-पीळी आंधी उठी
चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
थळ को होग्यौ जळ, थळ जळ को
संपट पाट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
डूंगर टूट जमीं में मिळग्या
देख्यौ ख्याल घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
चौरस भोम में डूंगर बणग्या
माया जाळ घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
टीबा ऊठ नदी बै लागी
फैल्यौ पाट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
नदियां सूख'र टीबा बणग्या
बेढब भूड घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
ऊंचा छा सो नीचा उतर्‌या
निचलौ ठाठ घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
टणका छा सो निमळा होयग्या
निमळा राज घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
म्हैलां की तो टपरी बणगी
टपरी म्हैल घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
तोसाखाना खाली होग्या
खाली पेट भर्‌यौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
म्हांकौ सपनौ साचौ होसी
समझौ भेद घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

घणौ=बहोत, ज्यादा। जबरौ=जोरदार। डूंगर=परबत। भोम=भूमि। टीबा=टीला, धोरा। म्हैलां=महलां। साचौ=सच्चौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हीरालाल शास्त्री किण भासा रा कवि मानीजै ?
   (अ) परंपरावादी विचारधारा रा (ब) सिणगारिक विचारधारा रा
   (स) प्रगतिशील विचारधारा रा (द) वीरतापरक विचारधारा रा
   ( )

2. लोकधुनां री मारफत कवितावां करण वाळा कवि है—
   (अ) हीरालाल शास्त्री (ब) शंकरदान सामौर
   (स) गिरधारीसिंह पड़िहार (द) अस्तअलीखां मलकांण
   ( )

3. 'सपनौ आयौ' कविता री मारफत कवि कांई कल्पना करी है ?
   (अ) राजतंत्र कायम रैवण री (ब) लोकराज आवण री
   (स) राजावां रै दीरघ जीवण री (द) पूंजीपतियां रै सासन री
   ( )

4. 'चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे।' इण ओळी रौ भाव है—
   (अ) क्रांति (ब) शांति
   (स) भ्रांति (द) विश्रांति
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता किण कवि री रचना है ?
2. 'सपनौ आयौ' कविता में कवि किणरी कल्पना करै ?
3. 'टणका' अर 'निमळा' सबदां रौ अरथ बतावौ ?
4. आजादी री लड़ाई रै समै क्रांति रौ माध्यम कांई हौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता रौ भाव-सौंदर्य बतावौ।
2. कवि लोकधुनां री मारफत कविता क्यूं करता ?
3. आजादी रै आंदोलन रै समै कविता में फूटरापौ अर सिणगार क्यूं नीं है ?
4. 'संपट पाट घणौ जबरौ रे', इण ओळी रौ आसय बतावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता रौ भाव दाखला देयनै समझावौ।
2. ''सपनौ आयौ कविता प्रगतिशील धारा री जनवादी कविता है।'' इण कथन नैं कविता रै माध्यम सूं सिद्ध करौ।
3. 'सपनौ आयौ' कविता रै माध्यम सूं कवि लोगां नैं कांई संदेस देवणौ चावै ? समझावौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. सपनौ आयौ अेक घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   काळी-पीळी आंधी उठी
   चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।

2. टीबा ऊठ नदी बै लागी
   फैल्यौ पाट घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   नदियां सूख'र टीबा बणग्या
   बेढब भूड घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।

3. टणका छा सो निमळा होयग्या
   निमळा राज घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   म्हैलां की तो टपरी बणगी
   टपरी म्हैल घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।